भूमंडलीकरण के दौर में महिलाओं की दशा एवं दिशा (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार

अर्चना कुमारी

आधुनिक भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री का शरीर व्यापार मुख्य आकर्षण बन गया है। विज्ञापन, संचार, फिल्म, टी0वी0, पत्र–पत्रिकाओं में नारी के अंगों का खुला प्रदर्शन हो रहा है। बेखौफ अश्लील फिल्में बन रही हैं। नारियाँ क्लबों में अमर्यादित कृत्य कर रही है। ऐसे में यह कहना कि, कहीं न कहीं कुछ दोष इस आधुनिक फैशन परस्त नारियों का भी है। साथ ही नारी शिक्षा भी, नारी शिक्षा के प्रति एक समरसता दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई है। उनकी धारणा भी बदल रही है वे विज्ञान तकनीकी, चिकित्सा, सूचना तकनीकी, फिल्म, पत्रकारिता, खेल, साहित्य, समस्त सरकारी, गैर सरकारी सेवाओं और राजनीति में बराबर की भागीदारी करने लगी है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है विकास धीमी एवं समय लेने वाली लम्बी प्रक्रिया है जिसे कोई रोक नहीं सकता, हाँ केवल उसकी गति प्रभावित कर सकता है। यद्यपि पुरूष प्रधान भारतीय समाज में पुरूष नारी को आज भी उपभोग की वस्तु के रूप में देखना चाहता है ''अहं ब्रह्म स्वरूपिनी मन्तः प्रकृति पुरूषात्मकं जगत।'' देवयर्थशीर्षम, दुर्गासप्तशती, गीता प्रेस उपरोक्त सूक्त में अत्यन्त गौरवमयी ढंग से मातृ सत्ता की अभिव्यक्ति हुई है।